श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

कोविड–19 : चुनौतियॉ एवं सम्भावना

गोविन्दगुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा द्वारा आयोजित वेबिनार

दिनांक 30 जून, 2020 समय दोपहर 12 बजे

स्थान : राजभवन, जयपुर

कोविड–19 : चुनौतियॉ एवं सम्भावना विषय पर आज मुझे जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से बात करने का मौका मिला है। विगत कई माह से कोरोना महामारी एक वैश्विक संकट के रूप में सबके सामने सुरसा के मुख के समान मुँह बांए खड़ी है। यह मानव के जीवन–संघर्ष की अग्नि परीक्षा ले रही है। इसके प्रभाव से विश्व का कोई भी कोना अछूता नहीं रहा है। ऐसा लगने लगा है कि ये बीमारी सभी को अपना ग्रास बनाने को तत्पर है, बिना जाति, धर्म, संस्कृति, रंग, नस्ल और नागरिकता का भेद किए।

ऐसी विषम आपदाओं से मानव जाति सदियों से जूझती आई है। अपनी प्रचंड जीवटता–जिजीविषा और संघर्ष क्षमता से आपदाओं को मानव जगत ने परास्त भी किया है। लाखों लोग कोरोना से ग्रस्त हैं। रोज यह रोग दिन दूनी रात चौगुनी दर से बढ़ रहा है। इससे संक्रमित होने वालों को देखा जाए तो बहुत जल्दी ही करीब एक करोड़ तक पहुँचने ही वाली है परन्तु उससे अधिक तेजी से लोग ठीक भी हो रहे हैं।

संक्रमण और मौतों के इतर इसके अन्य दुष्प्रभाव तो अभी आंकना शुरू ही हुआ है। आज हम यह मानने को मजबूर हो गए हैं कि सृष्टि के बनने में सदियाँ लगती हैं और उजड़ने में पल भर की भी देर नहीं लगती। किसी भी देश के विकसित होने और न होने के आजकल के मानकों में उस देश की अर्थ व्यवस्था सर्वोपरि मानी जाती रही है। कोरोना के काल ने धन कुबेर देशों को घुटनों के बल ला दिया है।

चिकित्सा सेवाओं में अग्रणी देशों के डॉक्टर्स और परमाणु शक्ति सम्पन्न देश भी इस अदृश्य से दुश्मन से गम्भीर चिन्ता में हैं। हमारे देश के सन्दर्भ में देखें तो करोड़ों कर्म योद्धा जो अपने श्रम के पुरुषार्थ से देश की तकदीर और तस्वीर बदलने का माद्दा रखते हैं, देखते देखते अपने ही देश में रातों रात अपने घरों को लौटने को मजबूर हो गए, अनेक असमय काल के ग्रास बन गए।

कृषि प्रधान देश के हमारे किसान भाई बहन मौत और भय की आशंका में देशवासियों का पेट भरने को निरंतर जूझते नजर आ रहे हैं। असंख्य दिहाड़ी श्रमिक बेघर और बेसहारा हो गए। सबके जीविकोपार्जन का अल्प सहारा भी इस कोरोना ने छीन लिया। देश का भविष्य माने जाने वाला किशोर और युवा वर्ग अपनी शिक्षा की यात्रा में बीच मझधार में अटक गया।

नन्हे नौनिहाल अनचाहे ही पिंजरे के पंछी बन कर रह गए। ऐसी विभीषिका तो किसी कालखंड में किसी देश विशेष में रही हो या न रही हो, लेकिन एक ही पीड़ा से पूरे विश्व को एक ही समय में ग्रसित करने वाली यह अनूठी घटना है। इस कोरोना ने चहुँ दिशाओं में चुनौतियों का अम्बार खड़ा कर दिया है। सभी लोग इसी असमंजस में हैं कि इस भीषण, भयावह महामारी से निपटने की शुरुआत कहाँ से की जाए। किसान, मजदूर, दिहाड़ी श्रमिक के सामने रोजगार की समस्या खड़ी है।

बरसात के मौसम में नई फसल बोने की शुरुआत हो गई है। आज हर देशवासी इस कोरोना से इतना भयभीत है कि उसके लिए काम पर लौटना ही सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। बंद पड़े उद्योग धंधों को फिर से पटरी पर लाना, किसानों को कर्मभूमि में पुनः उसी उत्साह से संलग्न करना, देश की अर्थव्यवस्था, परिवहन व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था को उसी ट्रेक पर फिर से लाना एक बड़ी चुनौती है। इसके अलावा फिलहाल बडी चुनौती कोरोना संक्रमण की बढती गति को थामना है। जब तक कोई विश्वसनीय इलाज नहीं मिल जाता, तब तक संक्रमितों को समुचित इलाज उपलब्ध कराना भी राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार के लिए बडी चुनौती है।

चुनौतियाँ हजारों हैं, लेकिन हमारी संस्कृति और देश की थाती में वे अमृत कण हैं, जिनसे इस संकट से निकल जाने के अनेक रास्तें बन जाते हैं और आगे भी हमारी राहें आलोकित होती रहेंगी। कहा जाता है कि जो कमजोरी होती है, वही मर्ज की दवाई भी बनती है। हमारे स्वर्णिम इतिहास में अनेक ऐसे अध्याय हैं, जो शाश्वत हैं, जिनमें आज भी सफलता के सूत्र छिपे हैं। आवश्यकता मात्र इस बात की है कि हम अपनी शक्ति को पहचाने।

सादा जीवन, उच्च विचार, स्वावलंबी बनों, अपनी आवश्यकताएँ न्यूनतम रखें, परिवार और संस्कृति मूल्यों से ही स्वयं और देश की रक्षा होगी, प्रकृति ही देवता है, जिसके उपयोग, संरक्षण, परिवर्धन ही हमारे ध्येय बने, आत्मनिर्भर बने, श्रमवीर बनें आदि परम्परागत मानव मूल्यों से सदियों से हम साक्षातकार करते हैं।

इस संकट काल ने सर्वत्र इम्युनिटी बढ़ाने, हमारे रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले पराम्परागत औषधीय वनस्पतियों के उपयोग को बढ़ावा दिया है। वह दिन दूर नहीं जब भारतीय शास्त्रों और साहित्य में छिपे और अभिव्यक्त अमृत सूत्रों से विश्व भी भारतीय संस्कृति को स्वीकारने लगेगा। भारतीय संस्कृति और जीवन पद्धति की वैज्ञानिकता आज भी बनी हुई है। उसने विगत शताब्दियों के मिथ्या ज्ञान के कुहासे से परत उघाड़ी है। सरकारें अपना लोक कल्याणकारी कार्य करती रहेंगी, जीविकोपार्जन के संसाधन जुटाती रहेंगी, लेकिन आत्म निर्भरता, स्वावलंबन के सूत्र ही दीर्घजीवी और शाश्वत सिद्ध होंगे।

यह ध्यान देने योग्य है कि जनजातीय क्षेत्र (बांसवाड़ा, डुँगरपुर, प्रतापगढ़) में कोरोना संक्रमण के लगभग 550 मामले सामने आए हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इनमें से एक प्रतिशत से भी कम जनजातीय बन्धु संक्रमित हुए, यह आंकड़े इस बात के द्योतक हैं कि जनजातीय व्यक्तियों ने अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखा है। ऐसा उनकी परम्परागत जीवन प्रणाली से सम्भव हो सका है। मैं उन्हें इसके लिए बहुत बहुत बधाई देता हूँ और साथ ही यह हम सभी के लिए अनुकरणीय उदाहरण भी है।

प्रकृति से अत्यन्त सामीप्य रखने वाली जनजातियां आज भी परम्परागत जीवन विधि को अंगीकार किए हुए है। प्रकृति में विश्वास रखते हुए यह लोग अपनी जीविका चला रहे हैं। उनकी मजबूत प्रतिरोधक क्षमता इसी का परिणाम है। आज की अर्थव्यवस्था को गाँव और नगर के बीच बांटकर नहीं देखा जा सकता।

इस वैश्विक संकट में गाँव आधारित कृषि उद्योग का मॉडल पूर्ण सम्भावना लिए है। जहाँ इससे ग्रामीण इलाकों से पलायन रुकेगा, वहीं कर्ज की समस्या और फसल के वाजिब दाम न मिलने से भी निजात मिल सकेगी।

निर्यात क्षेत्र में बहुत से अवसर ही मैन्युफैक्चरिंग का काम देश में किया जाना और असेम्बलिंग, टेस्टिंग, मेकिंग व पैकेजिंग में अनेकानेक अवसर हैं। यद्यपि कोरोना संकट से अभी पर्यटन को बहुत आघात लगा है, किन्तु भविष्य में हैल्थ और वैलनेस टूरिज्म की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मजबूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखला तैयार करने की अपार सम्भावनाएं हैं। क्लस्टर आधारित बाजार, अन्तर्देशीय जलमार्गों का विकास, डिजिटल भुगतान आदि ऐसी ही नयी दिशाएँ हैं, जो अब आवश्यक भी हैं और लोकल फॉर वोकल से विकास मार्ग प्रशस्त करने का माध्यम भी हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमारी विजय निश्चित है। निश्चित ही हमारा देश पुनः एक बार नई ऊर्जा एवं नई ताकत के साथ उभरेगा। आज पूरा विश्व भारत की और आशा भरी निगाह से देख रहा है। आने वाले समय में भारत के लिये नये अवसर उत्पन्न होगें। नये विदेशी निवेश होगे। नये रोजगार के अवसर बनेगें। जीवन फिर से पटरी पर होगा। हमारे कोरोना वारियर्स, हमारे प्रशासन, हमारे कर्मवीर, हमारी सरकारों का परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा एवं निश्चित ही नये वैभवशाली भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

सृष्टि में सत और असत का संघर्ष कालजयी है। यह संघर्ष केवल शस्त्रों–शास्त्रों का ही नहीं अपितु दृष्टि, वृत्ति और चित्त का भी संघर्ष हैं। हो सकता है अल्प काल के लिए आसुरी शक्तियाँ और वृत्तियाँ समर जीतती नजर आएं, लेकिन अंततोगत्वा जीत सत्य, सात्विकता और सुदृष्टि की ही होगी।

धन्यवाद, जय हिन्द।